मुख्य संरक्षक

डॉ॰ बालमुकुन्द पाण्डेय
संगठन सचिव,
अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

प्रो॰ रवीन्द्र कुमार
कुलपति,
नालन्दा खुला विश्वविद्यालय, नालन्दा

डॉ॰ देवी प्रसाद सिंह
अध्यक्ष
अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

आयोजन समिति

अध्यक्ष
प्रो. राजीव रंजन
राष्ट्रीय सचिव,
अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

समन्वयक
प्रो. राजीव कुमार
अध्यक्ष,
इतिहास संकलन समिति, बिहार

सचिव
प्रो. रामा कान्त शर्मा
क्षेत्रीय संगठन महासचिव,
अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

उपाध्यक्ष
श्री शैलेश कुमार
महासचिव,
इतिहास संकलन समिति,
दक्षिण बिहार

सह-समन्वयक
डॉ॰ सूर्य नारायण प्रसाद
कोषाध्यक्ष
इतिहास संकलन समिति,
दक्षिण बिहार

सह-सचिव
डॉ. हेगोयल
सहायक समन्वयक
इग्नू, नालन्दा कॉलेज,
बिहार शरीफ

डॉ॰ सुरेश पाण्डेय
क्षेत्र संगठन मंत्री (उत्तर-पूर्व क्षेत्र)
उत्तर बिहार, दक्षिण बिहार एवं झारखण्ड

डॉ॰ समीर कुमार शर्मा
कुलसचिव
नालन्दा खुला विश्वविद्यालय
(नालन्दा)

श्री हेमंत धींग मजूमदार
महासचिव
अखिल भारतीय इतिहास
संकलन योजना, नई दिल्ली

स्थानीय सचिव
डॉ॰ रत्नेश अमन
अध्यक्ष
इतिहास विभाग, नालन्दा कॉलेज,
बिहार शरीफ (नालन्दा)

सम्पर्क सूत्र :

डॉ॰ सूर्य नारायण प्रसाद - 8294000052
डॉ॰ हेगोयल - 7004592074
राहुल कुमार झा - 9560279577

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली
द्वारा संपोषित
तीन दिवसीय प्रथम अधिवेशन सह राष्ट्रीय संगोष्ठी
10-12 मई, 2025
इतिहास संकलन समिति, दक्षिण बिहार, पटना
सहयोग
नालन्दा खुला विश्वविद्यालय, नालन्दा एवं नालन्दा कॉलेज, बिहार शरीफ (नालन्दा)
"भारत बोध : एक परिचर्चा" (चार-वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के विशेष संदर्भ में)

सेवा में,

आयोजन अध्यक्ष
प्रो॰ राजीव रंजन
राष्ट्रीय सचिव, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

द्वारा संपोषित

तीन दिवसीय

प्रथम अधिवेशन सह राष्ट्रीय संगोष्ठी

10-12 मई, 2025

"भारत बोध : एक परिचर्चा"

(चार-वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के विशेष संदर्भ में)

आयोजक

इतिहास संकलन समिति, दक्षिण बिहार, पटना

सहयोग

नालन्दा खुला विश्वविद्यालय, नालन्दा

एवं

नालन्दा कॉलेज, बिहार शरीफ (नालन्दा)

आयोजन स्थल :

नालन्दा खुला विश्वविद्यालय,
नालन्दा, बिहार, पिन-803111

हर्ष के साथ सूचित करना है कि इतिहास संकलन समिति, दक्षिण बिहार द्वारा आयोजित एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा संपोषित **प्रथम अधिवेशन सह राष्ट्रीय संगोष्ठी** का आयोजन दिनांक **10-12 मई, 2025** को नालन्दा खुला विश्वविद्यालय एवं नालन्दा कॉलेज बिहार शरीफ के सहयोग से होने जा रहा है। इस प्रथम अधिवेशन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने के लिए भारतीय इतिहास के साहित्यिक, पुरातात्विक, पुराभिलेखीय, मौद्रिक, कला, शिल्पशास्त्र, अरबी एवं फारसी, अभिलेखीय एवं निजी मौलिक स्रोत, साथ ही विदेशी स्रोतों को अद्यतन अनुसन्धानों के आधार पर विश्लेषित, पुनर्व्याख्यातित तथा इतिहास लेखन में उनके उपयोग पर कार्य करने वाले विभिन्न संस्थाओं के संकाय सदस्य आमंत्रित हैं। प्रख्यात विद्वानों, विषय विशेषज्ञों एवं शोधप्रज्ञ इस संगोष्ठी में प्रस्तावित विषय पर व्याख्यान देंगे। वर्त्तमान अधिवेशन भारत के वास्तविक इतिहास को स्थानीय स्रोतों के आधार पर लिखने की दिशा में एक विनम्र प्रयास होगा।

इतिहास संकलन समिति, दक्षिण बिहार : इतिहास संकलन समिति, दक्षिण बिहार अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली कि एक सम्बद्ध इकाई है। यह इतिहास के क्षेत्र में कार्यरत विद्वत जनों का एक राष्ट्रव्यापी संगठन है जो इतिहास, संस्कृति, परम्परा आदि के क्षेत्र में प्रामाणिक, तथ्यपरक तथा सर्वांगपूर्ण इतिहास-लेखन तथा प्रकाशन आदि की दिशा में कार्यरत्त है। भारतीय इतिहास लेखन का जो कार्य अंग्रेजों के नेतृत्त्व में प्रारम्भ हुआ और वैज्ञानिक वस्तुपरक शोध के नाम पर जिसे भारतीय इतिहासकारों ने भी अपनाया, वह अनेक स्थानों पर पूर्वाग्रह से प्रेरित तथ्यों के अज्ञान अथवा जान-बुझकर कि गयी उपेक्षा पर आधारित है जिसके कारण भारतीय इतिहास में अनेक विसंगतियाँ एवं भ्रम उत्पन्न हो गए हैं। इतिहासलेखन में भारतीय स्रोतों की अवहेलना कर उसे तिरस्कृत किया गया। भारतीय-परम्पराओं एवं साहित्यिक स्रोतों की उपेक्षा आदि से भारत का इतिहास विकृत हुआ है। इतिहासकार के मन में किसी सर्वमान्य राष्ट्रीय आदर्श के अभाव तथा विभिन्न राजनीतिक वादों के प्रभाव ने राष्ट्रीय स्तर पर उसे वैज्ञानिक अस्पष्टता से ग्रस्त कर दिया है। इन विचारों की पृष्ठभूमि में इतिहास संकलन समिति का उद्देश्य है भारतीय कालगणन के आधार पर सृष्टि-रचना के प्रारम्भ से लेकर वर्तमान समय तक के इतिहास का पुनर्मूल्यांकन। हमारे देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा जीवन के अन्य सभी पक्षों को दर्शाते हुए हमारे देश का वास्तविक सूत्रबद्धात्मक तथा व्यापक इतिहास तैयार किया जाएगा। इस प्रकार के इतिहास पुनर्रचना के लिए प्राच्यविदया की विभिन्न विधाओं से संबन्धित प्रकाशित अप्रकाशित प्रामाणिक सामाग्री का स्थानीय स्तर पर संकलन के लिए इस प्रकार की संगोष्ठियाँ महत्वपूर्ण है।

नालन्दा खुला विश्वविद्यालय : प्राचीन शिक्षा के प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय के नाम पर 1987 ई॰ में स्थापित नालंदा खुला विश्वविद्यालय बिहार राज्य का एकमात्र विश्वविद्यालय है जो केवल दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने के लिए समर्पित है। 10 एकड़ क्षेत्र में फैले हुए इस विश्वविद्यालय में नवीनतम शिक्षण तकनीकों से सुसज्जित स्मार्ट क्लासरूम, विज्ञान प्रयोगशालाएँ और कंप्यूटर प्रशिक्षण सुविधाएँ उपलब्ध हैं। छात्र सुविधाओं के तहत लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग हॉस्टल और कैंटीन भी उपलब्ध है। छात्रों के लिए वातानुकूलित परीक्षा हॉल तथा लगभग 100,000 किताबों के संग्रह के साथ अत्याधुनिक पुस्तकालय इसकी विशेषता है। यहाँ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में मूल आधारित डिग्री पाठ्यक्रम और स्नातकोत्तर के साथ-साथ डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी उपलब्ध है। इसकी डिग्री/डिप्लोमा/प्रमाणपत्र उच्च अध्ययन, सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में रोजगार और सेवा पदोन्नति के लिए पात्र है। निश्चित रूप से नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय परंपरा और आधुनिक उन्नति का संगम है, जो विविध शैक्षिक जरूरतों को पूरा करता है।

नालन्दा कॉलेज, बिहार शरीफ (नालन्दा) : ज्ञान की धरती नालन्दा के मुख्यालय बिहार शरीफ में अवस्थित नालन्दा कॉलेज जिले का प्रथम अंगीभूत कॉलेज है जिसे NAAC के द्वारा B^+ की मान्यता प्रदान की गई है जिसकी स्थापना सन् 1870 में की गई थी। यह पटना कॉलेज के बाद स्थापित बिहार का दूसरा पुराना कॉलेज है जिसका शताब्दी वर्ष 1970 में मनाया गया था। एक हफ्ते तक चलने वाले शताब्दी वर्ष समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति श्री बी॰ बी॰ गिरी, राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर, बॉलीवुड की महान हस्ती श्री पृथ्वीराज कपूर सहित अन्य गणमान्यों ने शिरकत की। इस अवसर पर भारत सरकार ने नालन्दा कॉलेज पर 20 पैसे का डाक टिकट जारी किया, बिहार के किसी कॉलेज पर डाक टिकट जारी करने का एकमात्र उदाहरण है। कोरोना काल के दौरान सन् 2020 में कॉलेज ने अपनी स्थापना के गौरवशाली 150 वर्ष पूरे कर लिये। नालन्दा कॉलेज में स्नातकोत्तर एवं अनेक व्यावसायिक पाठ्यक्रम सहित 22 विभाग योग्य, अनुभवी एवं समर्पित शिक्षकों के निर्देशन में चल रही है। यहाँ लगभग 9000 छात्र-छात्राएँ अध्ययन कर रहे हैं। जिनके व्यक्तित्व विकास के लिए अनेक क्रियाकलाप लगातार कराये जाते रहे हैं। जिले का एकमात्र कॉलेज है जहाँ महिला छात्रावास है। यहाँ के विद्यार्थी देश और विदेश के हर क्षेत्र में उच्च स्तर पर कार्य कर रहे हैं। पूर्ववर्ती एवं वर्त्तमान छात्र-छात्राओं की उपलब्धियाँ नालन्दा जिले की विशिष्ट पहचान है। आधारभूत संरचना के रूप में सभी विभागों के लिए भवन, आधुनिकतम पुस्तकालय, आधुनिक सभागार, प्रयोगशालाएँ, परीक्षा भवन, स्मार्ट कक्षाएँ, सेहत केन्द्र, बाबू ऐदल सिंह पार्क, खेल की सुविधाएँ इत्यादि मौजूद हैं। कॉलेज में दूरस्थ शिक्षा के लिए इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय और नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय के अध्ययन केंद्र भी कार्यशील हैं। वर्त्तमान प्राचार्य डॉ॰ राम कृष्ण परमहंस के कुशल नेतृत्व में कॉलेज का चतुर्दिक विकास हो रहा है। यहाँ के विद्यार्थी अन्तर विश्वविद्यालय एवं अन्तरा विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में अपने बेहतरीन प्रदर्शन से कॉलेज का नाम लगातार रौशन कर रहे हैं। विश्वविद्यालय स्तर की परीक्षाओं में भी कई विषयों के टॉपर इसी कॉलेज के होते हैं जिसके लिए प्राचार्य महोदय की पहल यथा-विजिटिंग शिक्षक की नियुक्ति के जरिए सिलेबस ससमय पूरा करवाना उल्लेखनीय है। 2 करोड़ 57 लाख रुपये से इनडोर स्टेडियम का निर्माण अंतिम चरण में है, जिसके पूरा हो जाने पर राज्य एवं राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिताओं में इस कॉलेज के विद्यार्थियों का जलवा देखने को मिलेगा।

प्रतिभावान छात्र-छात्राएँ, प्रतिबद्ध शिक्षक और सहयोगी कर्मचारी के कारण कॉलेज पिछले 155 वर्षों से लगातार समाज में अपनी सार्थकता बना रखी हैं।

संगोष्ठी का उद्देश्य : 2019 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने LOBCF (लर्निंग आउटकम बेस्ड करिकुलम फ्रेमवर्क) के अंतर्गत 'आइडिया ऑफ भारत' नामक इतिहास पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। इसका उद्देश्य भारतीय विरासत, संस्कृति और सभ्यता की महिमा को पुनर्जीवित करना और उन नायकों/संतों, राजनीतिक नेताओं और वीर योद्धाओं के संघर्षों और उपलब्धियों को उजागर करना है। इस पाठ्यक्रम में भारतीय सांस्कृतिक पहचान के पुनर्निर्माण पर जोर दिया गया है:

पाठ्यक्रम भारतीय इतिहास के विभिन्न चरणों को, विशेषकर प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन तक, महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं और परंपराओं के संदर्भ में प्रस्तुत करता है। इसमें भारत बोध की अवधारणा, भारतीय समय और स्थान की विशिष्ट परंपरा, वैदिक और प्रागैतिहासिक साहित्यिक धरोहर को महत्व दिया गया है।

पाठ्यक्रम की संरचना में भारतीयता के तत्वों पर विशेष दृष्टि डाली गई है। इतिहास की पुनर्व्याख्या एवं आलोचनात्मक दृष्टिकोण को बदलने का प्रयास इस नवीन पाठ्यक्रम के अंतर्गत किया गया है। जहाँ पुराने पाठ्यक्रमों में वामपंथी और ब्रिटिश दृष्टिकोण से भारतीय तत्वों को कमजोर कर दिखाया गया था। वहीं नए पाठ्यक्रम में इन गलत आख्यानों को चुनौती देते हुए भारतीय सांस्कृतिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक पहलुओं को पुनः प्रमुखता दी गई है।

यह नवीन पाठ्यक्रम न केवल इतिहास की गहराई से समझ प्रदान करता है, बल्कि आने वाली पीढ़ी में राष्ट्रीय गर्व, सांस्कृतिक पहचान और संतुलित दृष्टिकोण का विकास भी सुनिश्चित करता है। विद्यार्थियों को इससे भारतीय सभ्यता के गौरवशाली अतीत की व्यापक समझ मिलेगी, जो उन्हें अपने सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ने में सहायक होगी।

इस प्रकार इतिहास के स्नातक के पाठ्यक्रम के द्वारा छात्रों को भारत बोध कराने का प्रयास किया गया है। उम्मीद है कि इस तीन दिवसीय अधिवेशन के माध्यम से विद्वतगण भारत की अवधारणा से परिचित हो सकेंगे।

अधिवेशन सह राष्ट्रीय संगोष्ठी के उप विषय (Sub-themes) :

- भारत वर्ष की अवधारणा
- भारतीय ज्ञान परम्परा, कला और संस्कृति
- धर्म, दर्शन और वसुधैव कुटुंबकम्
- विज्ञान, पर्यावरण एवं चिकित्सा विज्ञान
- भारतीय आर्थिक परम्परा
- स्रोत, इतिहास लेखन और प्रागैतिहासिक भारत
- आर्यन सभ्यता
- दक्षिण भारतीय इतिहास में संगम युग
- नई क्षेत्रीय शक्तियों का उदय और विकेंद्रीकरण का युग (हूण आक्रमण, पुष्यभूति राजवंश और कान्यकुब्ज)
- पूर्व मध्यकालीन भारत की संस्कृति
- मध्य काल में प्रतिरोध का इतिहास
- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का बदलता स्वरूप एवं नवीन इतिहास पुनर्लेखन
- इससे संबंधित कोई अन्य विषय।

संगोष्ठी में भाग लेने वाले विद्वान शोधार्थियों से सादर अनुरोध है कि वे उपर्युक्त उपविषयों में किसी एक पर अपना मौलिक, शोध उन्मुख एवं अप्रकाशित शोध पत्र ससमय प्रेषित कर दें। शोधपत्र का शीर्षक, मुख्य प्रतिपाद्य, शोध प्रविधि एवं निष्कर्ष स्पष्टतः उल्लिखित होना चाहिए। भविष्य में शोधपत्र को पुस्तक के रुप में प्रकाशित करने की योजना है। पूर्ण शोध आलेख लगभग 3000-4000 शब्दों में व शोध सारांश 250-300 शब्दों में होना चाहिए। शोध पत्र पूर्णरूपेण तैयार कर देवनागरी लिपि में KrutiDev010 अथवा अंग्रजी में Times New Roman में MS Word या Page Maker में टंकित कराकर ई-मेल issbiharconference@gmail.com पर प्रेषित करने की कृपा करें।

महत्वपूर्ण तिथियाँ :

शोध सारांश प्रेषित करने की अंतिम तिथि : 20..04.2025
पूर्ण शोध आलेख प्रेषित करने की अंतिम तिथि : 01..05.2025
पंजीकरण की अंतिम तिथि : 01.05.2025
संगोष्ठी प्रारम्भ होने की तिथि : 10.05.2025 समय-11.00 बजे प्रातः
संगोष्ठी समाप्त होने की तिथि : 12.05.2025 समय 01.00 बजे संध्या

पंजीकरण शुल्क (शोधार्थी एवं छात्र) : 800/-
पंजीकरण शुल्क (शिक्षक एवं अन्य) : 1000/-